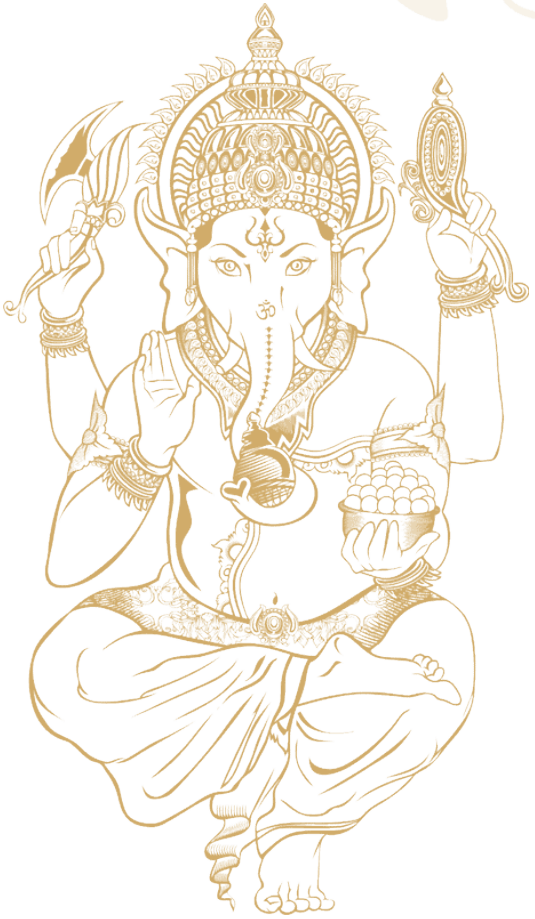

Anisha agrawal

06 Jan 2026

06:00 PM

Toronto

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120891501**

तिथि 06/01/2026 **समय** 18:00:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Toronto **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:20
अक्षांश 43:39:00 उत्तर **रेखांश** 79:20:00 पश्चिम **मध्य रेखांश** 75:00:00 पश्चिम **स्थानिक संस्कार** -00:17:20 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	00:48:48 घं
वेलान्तर	00:05:56 घं
सूर्योदय	07:50:52 घं
सूर्यास्त	16:56:13 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	माघ
पक्ष	कृष्ण
तिथि	4
नक्षत्र	मघा
योग	आयुष्मान
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मूषक
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	मू-मुक्ता
पाया(रा.-न.)	रजत-रजत
होरा	बुध
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

केतु 2वर्ष 2मा 3दि

केतु

06/01/2026
11/03/2028

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	06/01/2026
गुरु	03/02/2026
शनि	15/03/2027
बुध	11/03/2028

योगिनी

भद्रिका 1वर्ष 6मा 20दि

भद्रिका

06/01/2026
28/07/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	06/01/2026
संकटा	08/03/2026
मंगला	28/04/2026
पिंगला	07/08/2026
धान्या	06/01/2027
भ्रामरी	28/07/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			06:10:27	कर्क	पुष्य	1	शनि	बुध	---	0:00			
सूर्य			22:25:02	धनु	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	शनि	मित्र राशि	0.99	मातृ	पितृ	सम्पत
चंद्र			09:11:13	सिंह	मघा	3	केतु	गुरु	मित्र राशि	1.02	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल		अ	23:02:38	धनु	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	शनि	मित्र राशि	1.01	अमात्य	भ्रातृ	सम्पत
बुध		अ	13:37:29	धनु	पूर्वाषाढ़ा	1	शुक्र	शुक्र	सम राशि	0.86	पुत्र	ज्ञाति	सम्पत
गुरु	व		26:20:40	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	केतु	शत्रु राशि	1.26	आत्मा	धन	वध
शुक्र		अ	22:28:52	धनु	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	शनि	सम राशि	0.88	भ्रातृ	कलत्र	सम्पत
शनि			02:19:10	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	0.96	कलत्र	आयु	वध
राहु	व		16:03:51	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु	व		16:03:51	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	सूर्य	शत्रु राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

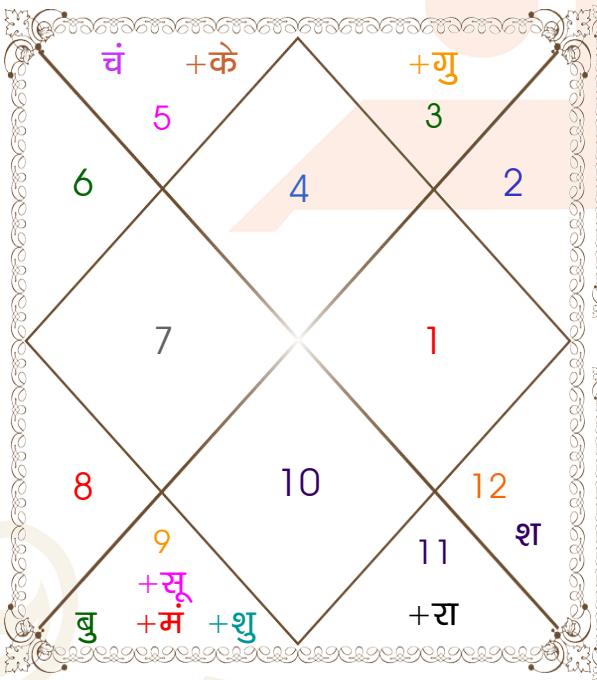

चन्द्र कुंडली

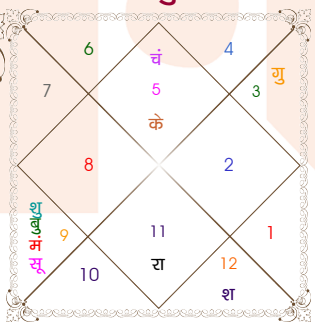

नवमांश कुंडली

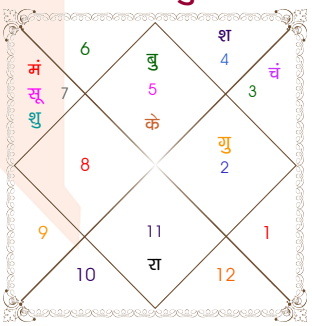

सर्वाष्टकवर्ग

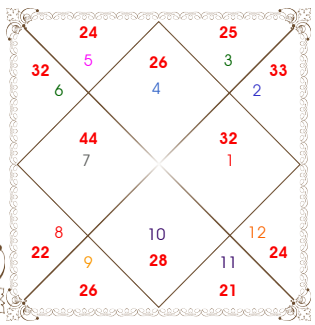

दशमांश कुंडली

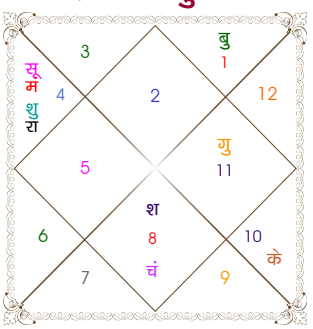

नक्षत्रफल

आपका जन्म मघा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाडी अन्त्य, वर्ण क्षत्रिय, वर्ग मूषक, गण राक्षस तथा योनि मूषक होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "मु" अक्षर से प्रारम्भ होगा।

आपका जन्म गण्डमूल नक्षत्र में हुआ हैं। यद्यपि तृतीय चरण के जातकों को इसका दोष नहीं होता तथापि सावधानी वश इस नक्षत्र की शास्त्रोक्त विधि से शान्ति करवा लेनी चाहिए। इसके लिए नक्षत्र के 28000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए तथा 27 दिन बाद पुनः जब यह नक्षत्र आवे तो शास्त्रोक्त विधि विधान से जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करके शान्ति करा लेनी चाहिए। यह कार्य किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न होना चाहिए।

ऊँ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
अक्षन्नपितरो ळमीमवन्तः पितरोडतृप्यन्त पितरः शुन्धध्यम्।।
जातक परिजातः

आप अपने पूर्ण जीवन काल में धनैश्वर्य से हमेशा सम्पन्न रहेंगी। आप सेवकों तथा नौकरों की स्वामिनी बनेंगी जो आपकी सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। साथ ही आप समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का भी उपभोग करने वाली होंगी। देवताओं तथा माता पिता की आप प्रिय एवं आज्ञाकारिणी रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक महान उद्यमी महिला भी होंगी।

बहुभृत्यः धनो भोगी सुरपितृभक्तो महोद्यमः पित्रे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् मघा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, बहुत से नौकरों को रखने वाला, भोगैश्वर्य से सम्पन्न, माता पिता तथा देवताओं का भक्त एवं उद्योगी पुरुष होता है।

आप अपनी माता पिता तथा पितामह की सेवा को हार्दिक श्रद्धा से सम्पन्न करेंगी तथा सुख और दुःख में हमेशा तन मन धन से इनका सहयोग करेंगी। आप के अधिकांश कार्य साहसपूर्ण होंगे तथा साहसिक कार्यों के प्रति आपके मन में विशेष उत्सुकता रहेगी फलतः आप पुलिस या सेना में कोई उच्चपद प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर सकेंगी। साथ ही राजकीय सेवा में भी आप तत्पर रहेगी।

बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी।
चमूनाथा राजसेवी मघायां जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक अधिक नौकरों वाला, धनवान, भोगी, पितृभक्त, महान उद्यमी, सेनापति तथा राजा की सेवा में तत्पर रहता है।

आप पल प्रतिपल अपने रूप को बदलने में चतुर होंगी। साथ ही उत्सवों के लिऐ आप अत्यधिक लालयित रहेंगी तथा प्रयत्नपूर्वक इनका आयोजन करेंगी तथा अपना पूर्ण सहयोग अर्पण करेंगी। आप अपने ज्ञान तथा बुद्धि के बल से सामान्य जनता पर शासन करने वाली कोई उच्चाधिकारी भी हो सकती हैं।

बहुरूपो धनीभोगी पितृभक्तो महोत्सवी।
नरनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः।।
जातकदीपिका

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक बहूरूपी, धनवान, ऐश्वर्य सम्पन्न, माता पिता का भक्त महान उत्सवी, मनुष्यों का स्वामी तथा राजा की सेवा करने वाला होता है।

आपके हृदय में कठोरता के भाव की प्रबलता रहेगी तथा दयाभाव अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेगा। आपका स्वभाव प्रारम्भ से ही तेज से युक्त रहेगा। ज्ञानार्जन तथा विद्याध्ययन में आप पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त करेंगी। आपकी रूचि पुण्य के कार्यों में रहेगी तथा पापकर्मो से हमेशा दूर रहेंगी। आपकी बुद्धि भी तीव्र होगी तथा शत्रुओं को वश में करना या पराजित करने में आप पूर्ण रूप से दक्ष रहेंगी। अभिमान का भाव भी कभी कभी आपके मन में उत्पन्न होगा तथा पति को वश में करने में आपको पूर्ण सफलता मिलेगी साथ ही समाज से आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्राप्त होगा।

कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्र स्वभावस्त्वनवद्यविद्यः।
चेजन्मभं यस्य मघा नघः सन्मति सदाराति विघातदक्षः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मघा नक्षत्र का जातक कठोर हृदय वाला पिता का भक्त, तीव्र स्वभाव वाला, विद्यावान, पाप रहित, बुद्धिमान एवं शत्रु को जीतने वाला होता है।

आप रजत पाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः जीवन में आप धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी तथा कभी भी इसके अभाव की अनुभूति नहीं करेंगी। साथ ही जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को आप अर्जित करेंगी एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा दानशीलता के भाव से नित्य युक्त रहेंगी। साथ ही आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपको अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में शीघ्र ही इच्छित सफलता प्राप्त होगी। शरीर से आप अत्यन्त ही कान्ति युक्त रहेंगी तथा आपकी मुखाकृति भी सुन्दर एवं दर्शनीय रहेगी। समाज में आप आदरणीय तथा श्रद्धेय महिला समझी जाएंगी। आप का परिवार भी विस्तृत रहेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। विद्याध्ययन के क्षेत्र में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगी तथा एक विदुषी के रूप में ख्याति अर्जित

करने में सफल होंगी। इसके अतिरिक्त आप प्रायः अल्प मात्रा में बोलना ही पसन्द करेंगी।

सिंह राशि में जन्म लेने के कारण आपकी प्रकृति उग्र तथा तेज से युक्त रहेगी। आपकी मुखाकृति तथा मस्तक विशालता लिए होगा। आपके नेत्र छोटे तथा पीले रंग के होंगे। पर्वतों तथा वनों में सैर करना आपको प्रियकर लगेगा। कभी कभी आप बिना किसी कारण के शीघ्र ही क्रोधित भी हो जाया करेंगी। आप जीवन में मानसिक चिन्ताओं से समय समय पर चिन्तित रहेंगी। आपके मन में दानशीलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल इस प्रवृति का समाज में आप प्रदर्शन करती रहेंगी। कभी कभी आप के अन्दर गर्व के भाव की भी प्रबलता होगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। आपकी बुद्धि भी स्थिर होगी तथा अपने समस्त कार्यकलापों को शीघ्रता से नहीं अपितु धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगी। साथ ही आप माता पिता के प्रिय एवं स्नेह की पात्र रहेंगी। आपकी संतति में पुत्र संख्या भी अल्प रहेगी।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोळल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननगग कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योळर्कभे।।
बृहज्जातकम्

आपके शरीर की हडिड्यां पुष्टता से युक्त रहेंगी। स्वभाव में तीव्रता का समावेश रहेगा। आप किसी भी कार्य को शुरू करने से पहले अपने गले से एक विशेष प्रकार की ध्वनि निकालने वाली होंगी। साथ ही आपका वक्षस्थल सुन्दर, विशाल तथा आकर्षक रहेगा। समाज में सभी लोग आपको यथोचित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने चारों तरफ की परिस्थितियों का गम्भीरता पूर्वक अवलोकन करके ही किसी कार्य को प्रारम्भ करेंगी जिससे आपकी सजग प्रवृति का ज्ञान होता हैं।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररुदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दातातीक्ष्णोळल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।
सारावली

आपका हनुभाग स्थूल तथा मुखमंडल विस्तृत रहेगा। कभी कभी आप गर्व का भी प्रदर्शन करेंगी तथा पराक्रम से भी युक्त रहेंगी। माता की आप अत्यन्त प्रिय तथा उन्हें हार्दिक सम्मान प्रदान करने वाली होंगी।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोळभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।
फलदीपिका

आप अपने पेट भरने योग्य धनार्जन करके प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करने

वाली होंगी तथा आपके स्वभाव में प्रारम्भ से ही क्रोध की मात्रा अधिक रूप में रहेगी। साथ ही वनों तथा पर्वतों में भ्रमण की उत्सुकता आपके मन में व्याप्त रहेगी। आप बन्धु तथा सेवक से भी युक्त रहेंगी।

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः।।
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आपके हृदय में क्षमाशीलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा किसी भी अपराधी को आप क्षमा करने की शक्ति से युक्त रहेंगी। आप अपने कार्यों को करने में सदा तत्पर रहेंगी तथा खाली बैठना आपको रुचिकर नहीं लगेगा। आप हमेशा देश विदेश की यात्राओं में व्यस्त रहेंगी। शीत से आप प्रायः भयभीत रहेंगी। आपके सभी मित्र अच्छे तथा गुणवान रहेंगे तथा स्वभाव भी आपका विनम्र होगा अतः सभी लोगों से आपको स्नेह तथा प्रशंसा की प्राप्ति होगी। आप कई प्रकार से व्यसनों को करने में भी तत्पर रहेंगी। लेकिन समाज में आप पूर्ण यश या कीर्ति प्राप्त करेंगी।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपके नेत्रों तथा शारीरिक बनावट सुन्दर एवं आकर्षक होगी। आप गम्भीर दृष्टि से युक्त तथा अपने सम्पूर्ण जीवन को सुखपूर्वक व्यतीत करने वाली होंगी।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी व्यर्थ की बातें बोलने वाली होंगी। आपके अर्न्तमन में दया एवं करूणा के भाव की न्यूनता रहेगी तथा कठोरता के भाव की प्रबलता रहेगी। साहसिक कार्यों को सम्पन्न करने में आप पूर्ण रूप से उत्सुक एवं सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप अर्थहीन बातों पर भी शीघ्र क्रोधित तथा उत्तेजित होने वाली होंगी। आप अपने कार्य को सफल बनाने में नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। अन्य लोगों से बात बात पर विवाद करेंगी फलतः समाज में अधिकांश लोगों से आपका परस्पर वैमनस्य रहेगा। अतः सामाजिक जनों से संयम तथा विन्रमता पूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

आप प्रमेह तथा उन्माद रोगों से पीड़ित रहेंगी तथा शारीरिक सुन्दरता भी मध्यम रहेगी। आपकी वाणी कभी कभी अत्यन्त कठोर होगी जो श्रोता को अच्छी नहीं लगेगी। अतः अपने सम्भाषण में प्रयत्नपूर्वक मधुर शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।

दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मूषक योनि में जन्म होने के कारण आपकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र होगी तथा आप समस्त धन धान्य एवं ऐश्वर्य से सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगी। आप अपने कार्य को करने में हमेशा तत्पर रहेंगी। निष्क्रियता आपको अच्छी नहीं लगेगी अतः किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहैंगी। आलस्य आपसे बहुत दूर रहेगा। परन्तु आप किसी अन्य जन पर विश्वास कम ही करेंगी तथा जो कुछ भी कार्य करवाएंगी अपने समक्ष ही सम्पन्न करवाएंगी।

बुद्धिमान् वित्तसम्पूर्णः स्वकार्यकरणोद्यतः।
अप्रमतोळप्यविश्वासी नरो मूषक योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मूषक योनि का जातक बुद्धिमान, धनवान, स्वकार्य में तत्पर, गर्वहीन तथा किसी पर भी विश्वास न करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्य ाध्ययन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान

रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र, धृतियोग, ववकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशि में स्थित चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले हैं। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियों, मूल नक्षत्र, धृतियोग तथा ववकरण में कोई भी शुभ कार्य,व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करै अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार, प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि समय आपके लिए सर्वथा प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी पदोन्नति या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में रूकावट आ रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव सूर्य भगवान को अर्ध्य देना चाहिए तथा उपासना करनी चाहिए। इसी के साथ रविवार का उपवास भी श्रेष्ठ रहेगा। साथ ही सोना, माणिक्य, रक्त वस्त्र, गेहूं, रक्त पुष्प तथा धृतादि पदार्थो को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त सूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी सुयोग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।